सम्पन्नता बनी मछली की दुश्मन

दुर्लभता को सम्पन्नता की निशानी के रूप में देखा जा रहा है। यदि अधिकाधिक नव धनाढ्य लोग शेम्पेन और दुर्लभ स्टर्जियन मछली को अपना बड़प्पन प्रदर्शित करने के साधन के रूप में उपयोग कर रहे हैं, तो स्टर्जियन का अस्तित्व खतरे में है।

बिना सोचे-समझे किए गए काम से नुकसान तो हमेशा ही होता है, लेकिन इस बार यह किसी जीव के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न किए हुए है। कैस्पियन सागर में बहुत ही कम संख्या में बची स्टर्जियन नाम की विशालकाय मछली आज विलुप्ति की कगार पर है। इसके पीछे है एक बेतुकी धारणा जिसमें इसे सम्पन्नता की पहचान के रूप में देखा जाता है और ज़्यादा से ज़्यादा लोग स्वयं को सम्पन्न की श्रेणी में ही देखना चाहते हैं।

पेरिस विश्वविद्यालय के फ्रैंक कौरचैम्प और एग्नेस गॉल्ट ने कई बड़ी होटलों में ज़ायके का एक परीक्षण किया जहां लोग कैवियर खाने के आदी थे। इसी प्रकार का परीक्षण उन्होंने एक सुपर बाज़ार के अनुभवहीन ग्राहकों पर भी किया। स्वाद लेने वालों से कहा गया कि उन्हें कैवियर के दो नमूने दिए जा रहे हैं। इन्हें 'दुर्लभ' और 'साधारण' कहकर पेश किया गया था जबकि ये एक ही तालाब में पली स्टर्जियन से बने थे। स्टर्जियन से बने अचार को कैवियर कहते हैं।

कौरचेम्प ने सोसायटी फॉर कंज़र्वेशन बायोलॉज़ी के एक सम्मेलन में बताया कि 57 प्रतिशत लोगों ने तो बिना चखे ही 'दुर्लभ' के प्रति पसंद ज़ाहिर कर दी जबकि 'साधारण' की तरफ तो किसी ने देखा तक नहीं। दोनों नमूनों को चखने के बाद 70 प्रतिशत अनुभवी लोगों ने कहा कि उन्हें दुर्लभ कैवियर ही ज़्यादा पसंद है। यही हाल सुपर मार्केट में किए गए परीक्षण में भी रहे जहां 52 प्रतिशत लोगों ने बगैर चखे ही 'दुर्लभ' कैवियर की पसंद ज़ाहिर की और 74 प्रतिशत ने चखने के बाद। न्यूयार्क के प्यू इंस्टीट्यूट ऑफ ओशियन साइन्स के एलेन पिकिच का कहना है कि यह खतरनाक है।

तथ्य यह है कि दुर्लभ कैवियर को सम्पन्नता की निशानी

के रूप में देखा जा रहा है। यदि अधिकाधिक नव धनाढ्य लोग शेम्पेन और कैवियर की जोड़ी को अपना बड़प्पन प्रदर्शित करने के साधन के रूप में उपयोग कर रहे हैं, तो स्टर्जियन का अस्तित्व खतरे में है। कौरचैम्प कहते हैं कि चीन आज तेज़ी से बढ़ती हुई अर्थ व्यवस्था है और लाखों लोग अमीरों की श्रेणी में आते जा रहे हैं। ऐसे में स्वयं की हैसियत प्रदर्शित करने के लिए वे ऐसी चीज़ों का सहारा ले रहे हैं।

उक्त अध्ययन से लगता है कि यदि प्राकृतिक स्टर्जियन के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए बगैर मात्र स्टर्जियन की खेती करके उससे बने कैवियर को बढ़ावा दिया गया तो काम नहीं चलेगा। क्योंकि लोग प्राकृतिक स्टर्जियन को 'दुर्लभ' मानकर उसे ज़्यादा पसंद करते रहेंगे।

स्टर्जियन को बचाने के लिए प्रयास कर रही संस्था कैवियर एम्पटॉर के पिकिट का मानना है कि एक वर्ष के लिए व्यापार पर प्रतिबंध लगाकर आप किसी प्रजाति को नहीं बचा सकते। एक अनुमान के मुताबिक यदि दोहन की मौजूदा रफ्तार चली, तो सन 2012 तक कैस्पियन सागर से स्टर्जियन का सफाया हो चुका होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***